रात्रिक्लास 7-4-68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

*बाबा*********

बाबा पूछते हैं बाप आये ही आये हैं या कोई ने बुलाया है। शिवबाबा बच्चों से पूछते हैं शिवबाबा आये ही आया है या बच्चों ने बुलाया? (ड्रामा अनुसार आया, बच्चों ने भी बुलाया था) बाबा अक्सर ही दो पूछते हैं बुलाया है या आये हो आया? यह जरूर है बच्चों को तो मालूम नहीं था बाप के आने का समय है। आये हो जो करे वह देवता, कहनेसे जो करे वह मनुष्य। जिनको जानते ही उनको बुलावे भी कैसे। बाप कहते हैं मैं आये ही ड्रामा अनुसार आया हूं। मनुष्यों को पता नहीं है बाप आने वाला है। मुझे मालूम है किस समय जाना है। मनुष्य तो एडीटर हैं ना। तुम भी एडीटरहो। बाप कहते हैं मैं आये ही आया हूं। ड्रामा के प्लैन को मैं ही जानता हूं। मैं आये ही आया। ड्रामा को बाप ही जानते हैं तब तो बच्चों को ड्रामा का राज़ बताते हैं। मुझे नालेज थी कि इस समय जाना है ड्रामा का समय ही ऐसा है। बिगर बुलाये आये ही आया। ऐसे तो बतलाते ही रहते थे। परन्तु ड्रामा को अच्छे जानने वाला बाप ही है। बाप ही आकर समझाते हैं। मैं आया हूं। तुमको फिर से वही सहजराजयोग सिखलाने। मुझे नालेज थी कि कब जाना है। बाप बिन बुलाये आते हैं। ड्रामा को न जानने कारण वह बुलाते हैं। बुलाना भी सिध होता है नहीं। कहते हैं भगवान वगा2 ठिकर-भितर में है। फिर बुलायेंगे कैसे। बाप सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानने की कितनी बुधि देते हैं। मनुष्य तो बन्दर से भी बदतर थे। ऋषि-मुनि भी नेतो2 करते थे। जानते ही नहीं थे फिर बुलाने की तो बात ही नहीं। ड्रामा के प्लैन को बाप ही जानते हैं। इसलिए उनको नालेजफुल कहा जाता है। ऐसे नहीं मनुष्यों के दिलों को जानते हैं। बाप कहते हैं जो न आप को जानते, न मुझे ही जानते हैं तो बुलायेंगे फिर कैसे। मैं तो बहुत अपनी रथी से ही आता हूं। सभी मनुष्य मात्र रथी से पार्टबजाते हैं। मालूम नहीं पड़ता है। जब ऐसी हालत बच्चों को होती है तब मैं आकर अपना भी परिचय देता हूं। आने का राज़ भी समझाता हूं। समय भी समझाता हूं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। जब कि मैं आता हूं तुमको पुरुषोत्तम बनाने। तुम्हारा एमआबजेक्ट है यह बनने का। बाप आते जरूर हैं। कहते हैं बच्चों मैं राजाओं का राजा बनाने आता हूं। यह पढ़ाई भी है तो यज्ञ भी है। यज्ञ में आहुति जरूर डालनी है। सहस्त्र यज्ञ भी है। ज्ञान और योग भी है। तो बच्चों को समझाते हैं जो मुझे याद करते हैं। मैं ज्ञान और योग भी सिखाता हूं। सारी पुरानी दुनिया भी इस में स्वाहा होनी है। इसलिए स्वाहा यज्ञ कहा जाता है। और साथ योग लगाने से ···· बच्चे सिर्फ मुझे याद करो। योग तो अनेक प्रकार के सीखते यह है भक्ति की बात नहीं है। ब्रह्म को वा तत्व को फादर नहीं कहेंगे। अभी बाप समझाते हैं बच्चे मुझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। योग का अक्षर भी न लो। बाबा स्थूल ऐक्टीव तो सिखलाते नहीं। सिर्फ बाप की यात्रा सिखलाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। ऐसे भी नहीं बैठ कर याद करना है। तौलिक बाप को बैठ कर याद करते हो ना। चलते-फिरते सभी कुछ करते हो=उनको याद करते हो। अभी यह ध्यान में रखना है याद से ही हम सतोप्रधान बनेंगे। काम करते हुये भी मेरे को याद करो। कम से कम आठ घंटा गवर्मेन्ट के सर्विस में रहना है। तो कर्मातीत अवस्था होगी। तुम पुरुषार्थ करते रहते हो। देखते भी हो मेहनत है। बाबा युक्तियां बहुत बतलाते हैं। घूमने जाओ तो भी याद में रहो। ऐसे ऐसे अपना चार्ट बढ़ाते रहो। फायदा है। तब ही तुमको खुशी का पारा चढ़ेगा। देवताओं को सदैव आन्तरिक खुशी रहती है ना। बच्चे समझते हैं बाबा तो बहुत ही लायली है। मोस्ट बिलवेड है। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। दुनिया में कोई भी मनुष्य नहीं जो अपने को आत्मा समझे और बाप को जाने। बाप समझाते हैं तुम कैसे आत्मा हो। तुम्हारे में पार्ट अविनाशी भरा हुआ है। यह बाप ही आकर नालेज देते हैं। सतोप्रधान बन सतोप्रधान विश्व का मालिक बनना है।

बुलाने जो आये वह मनुष्य। आये हो वह देवता ····· बाप को याद करने से ही बेड़ा पार है। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते— नमस्ते।

::-ओमशान्ति::-